



सुपर स्टार-12

“नक्श को ट्रेन में कुछ लड़कियाँ मिली जो बॉलीवुड से जुड़ी थी.. आपस में बात शुरू हुई तो सबसे अपनी अपनी जिन्दगी के बारे में बताया... फिर सब पहुंचे एक अपार्टमेंट में... गले दिन उन लड़कियों ने उसे किसी काम से एक फ़िल्म स्टूडियो में भेजा... पढ़िए कहानी के इस भाग में... ..”

Story By: (shakti-kapoor)

Posted: Friday, June 12th, 2015

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [सुपर स्टार-12](#)

सुपर स्टार-12

सुबह नाश्ते के बाद निशा ने मुझे एक लिस्ट दी.. इस लिस्ट में कुछ नाम और पते लिखे थे।

निशा- इस लिस्ट में जो नाम दिए गए हैं.. तुम्हें उनसे मिलना है और ये हैं फाइलों की कॉपी.. जिस नाम के सामने हम तीनों में से जिसका भी नाम लिखा है.. उसे ही देना वो फाइल..

फिर उसने मुझे कुछ पैसे दे दिए।

मैं अब सोसाइटी से बाहर आ चुका था। आज तक मैंने शायद ही कभी घर पर कोई काम किया था। सो थोड़ा अजीब सा लग रहा था.. पर इतना पता था कि इंसान अपने अनुभवों से ही सीखता है... सो मैं भी सीख ही जाऊँगा।

लिस्ट में कुल मिला कर बाईस लोगों के नाम थे और लगभग पता यहीं आस-पास का ही था।

तृष्णा ने अपना एक फ़ोन मुझे दिया था.. जिसमें मैं गूगल मैप पर रास्ते ढूँढ सकता था।

पहला पता था 'यशराज फिल्मस' का। अँधेरी पश्चिम का पता था और वहाँ मुझे तीनों की फाइल देनी थीं, मैंने टैक्सी ली और वहाँ चला गया।

पहली बार मैं फ़िल्मी दुनिया के लोगों से मिलने वाला था, मेरे अन्दर अजीब सा उत्साह था। ऐसा लग रहा था कि जैसे मेरी फेवरेट हीरोइन ने मुझे डेट पर बुलाया हो।

मैं अब यशराज स्टूडियो के ऑफिस में पहुँच चुका था, बड़ा सा नारंगी दरवाजा और एक बड़ी सी बिल्डिंग.. ठीक वैसा ही जैसा कि मैंने सोचा था।

मैं दरवाज़े के पास पहुँचा, गेट कीपर से कहा- भैया जी मुझे सुभाष सर से मिलना है और ये फाइलें देनी हैं।

गेट कीपर ने कहा- आज एक फिल्म की ऑडिशन हो रही है.. बाद में आना.. आज बस ऑडिशन देने आए लोगों को ही अन्दर आने की इज़ाज़त है।

मैं अब सोच में पड़ गया.. काम की शुरुआत ही नाकामयाबी से हुई.. तब तो हो चुका.. मुझसे काम और अगर आज मैंने फाइल सभी को नहीं दी तो पता नहीं.. निशा मुझे रहने भी दे वहाँ या नहीं।

मुझे किसी भी तरह फाइल अन्दर पहुँचानी थी तो फिर से मैं गेट के पास गया और कहा- भैया.. मुझे भी ऑडिशन देना है, फॉर्म कहाँ भरूँ ?

गेट कीपर-फॉर्म भरा जा चुका है बस अब ऑडिशन शुरू होने ही वाला है।

मैंने जेब से दो हज़ार निकाले और उसकी हाथों में पकड़ाता हुआ बोला- कैसे भी फॉर्म भरवा दो। अब आप लोग ही हमारी मदद नहीं करेंगे तो और कौन करेगा।

वो थोड़ी देर सोच कर अन्दर गया और लगभग पांच मिनट बाद आया- यह लो फॉर्म जल्दी से भर कर दे दो।

अपनी कोई तस्वीर तो थी नहीं.. तो मैंने तस्वीर वाली जगह पर गोंद से निशान बनाया.. जिससे सबको लगे कि मैंने तस्वीर तो चिपकाई थी.. पर फॉर्म पहुँचाने वाले से ही खो गई और फॉर्म भर कर उसे मैंने मोड़ कर दे दिया।

गेट कीपर ने मुझसे एंट्री करवाई और अन्दर जाने को कहा। पहली जंग तो जीत चुका था मैं।

अब अन्दर जाकर उस सुभाष नाम के आदमी को ढूँढना था। मुझे गेट पर एक लड़की खड़ी

दिखाई दी। उसके पास यशराज की आईडी थी, मैं उसके पास गया- मैडम सुभाष सर से मिलना था, वो कहाँ मिलेंगे ?

उसने जवाब दिया- वो अन्दर ऑडिशन रूम में हैं.. और तुम यहाँ ऑडिशन देने आए हो न.. ? तो बाहर क्या कर रहे हो। अन्दर ऑडिशन शुरू हो चुका है।

अब मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा, मैं भला ऑडिशन क्या दूँगा, मुझे तो एक्टिंग का 'ए' भी नहीं आता, आज तो बड़ी बेइज्जती होने वाली है मेरी। मन तो कर रहा था कि यहीं से भाग जाऊँ.. पर मैं अन्दर था और दरवाज़ा लॉक हो चुका था।

मन ही मन मैंने कहा- हे श्री श्री अमिताभ बच्चन जी.. आज मुझे एक्टिंग का आशीर्वाद दे दो, बस मेरी इज्जत रह जाए आज।

ऑडिशन रूम के बाहर बहुत से चेहरे थे। सब की आँखों में उम्मीद और कई आँखों में तो जैसे इतना कॉन्फिडेंस था कि यहाँ वहीं चुने जाने वाले हैं और एक तरफ मैं बेहद घबराया सा कि पता नहीं वो सब.. मेरे साथ क्या करेंगे। मैं पिछले चार दिनों से एक ही कपड़े में था.. सो वो भी अब गंदे दिखने लगे थे। मैं वाशरूम में गया और अपने काले पैट में जहाँ-जहाँ गंदगी के निशान थे.. उन्हें पानी से साफ़ किया.. पर ये क्या.. पानी से भीग कर मेरी पैट पर जो निशान आए थे.. उससे तो लोग कुछ और ही समझ बैठते।

खैर.. मैं अब बाहर आया और एक कुर्सी पर बैठ गया। अन्दर से जो लोग बाहर आ रहे थे.. उन्हें देख कर ऐसा लग रहा था कि मानो वो सबके सब चुन लिए गए हों। तो फिर हमें क्यों बिठाया हुआ था उन्होंने.. जाने को कह देते हमें.. कम से कम मेरी जान तो छूटती।

एक तो कोई भी किसी से बात नहीं कर रहा था। सब एक-दूसरे को ऐसे देख रहे थे.. मानो ये कोई कुश्ती का अखाड़ा हो।

मेरी इससे और भी बेचैनी बढ़ रही थी। बैठे-बैठे शाम हो चुकी थी, अब आखिर में हम दो लोग बचे थे। अन्दर से हम दोनों को एक साथ ही बुला लिया गया। शायद उन्हें भी अब जाने की जल्दी थी। पहले उस दूसरे लड़के को बीच में बुलाया, स्टेज पर वो गया था और टाँगे मेरी कांप रही थीं।

वो लड़का- सर मैं आज तक की अपनी सबसे बेहतरीन एक्ट आपको दिखाना चाहता हूँ।

पैनल (जजों का पैनल जिसमे मशहूर फिल्म निर्देशक थे)- दिखाएँ आप।

जंग से लौटे हुए एक घायल सैनिक की उसकी माँ से बात वहाँ उसने दिखाई और हाँ उसके चेहरे के भाव बिल्कुल किसी ट्रेड एक्टर की तरह ही थे।

‘माँ मैं लौट आया माँ... देख तेरे कालजे के टुकड़े का दुश्मनों की गोलियाँ भी कुछ न बिगाड़ पाईं।

उसका एक्ट खत्म हुआ और पैनल ने खड़े हो कर उसका अभिवादन किया और मुझे हंसी आ गई।

वैसे मैं अक्सर कॉमेडी शो देखा करता था.. जो वहाँ वो अपना एक्ट दिखा रहा था और मैं अपने मन ही मन इमेजिन करने लगा था कि वहाँ वो नहीं बल्कि मेरे पसंदीदा कॉमेडी कलाकार ये एक्ट दिखा रहा है।

तभी मेरी नज़र पैनल पर गई। उस कमरे में सबके सब मुझे घूरे जा रहे थे। पैनल में से एक ने मुझसे पूछा- आपको क्या हुआ जनाब ? यह एक्ट देखकर हंसी आ रही थी।

मैं- मैं एक्टिंग के बारे में एक बात जानता हूँ.. यहाँ वही सबसे बेहतर है.. जो हर रंग में ढल जाए। कोई भी ये ना कह सके कि कोई एक खास एक्ट ही सबसे बेहतरीन है.. बल्कि उसके हर एक्ट को देख यह महसूस हो कि ये इससे बेहतर कोई भी नहीं कर सकता है।

खैर.. मैंने बात को तो संभाल लिया। पर अब मुझे इतना तो पता था कि अब मैंने लाल कपड़े पहन कर खुद ही सांड को न्योता दे दिया है।

पैनल- जनाब आप आ जाएँ। आज हम सब आपसे एक्टिंग की बारीकी सीखना चाहते हैं।

मैं मन ही मन में- बेटा आज तो बिना वेसिलीन के ही अन्दर जाने वाला है।

मैं- जैसा आप कहें सर।

पैनल- एक्टिंग में सबसे मुश्किल होता है एक साथ कई भावनाओं को कुछ ही पलों में जी लेना। मैं तुम्हें कहूँगा खुशी.. एक... दो... तीन और आप मुझे खुशी के एक्सप्रेशन दिखाओगे। जैसे-जैसे मैं शब्द कहता जाऊँगा आपके चेहरे के भाव वैसे वैसे बदलने चाहिए।

(मन ही मन में)

‘और हंस ले बेटा.. यही पास में ही हंसी आनी थी तुझे.. अब भुगतना तो पड़ेगा ही। पर आज मैं एक कोशिश तो कर ही सकता हूँ न.. क्या होगा.. ज्यादा से ज्यादा.. मुझे गालियाँ देंगे और निकाल देंगे.. यही न। ठीक है.. पर अब मैं पीछे नहीं हटूँगा।’

मैं स्टेज पर आ चुका था। मेरी आँखें अब बंद थीं और बस अब मैं शब्द सुनने को तैयार था।

पैनल- रोमांस.. एक... दो... तीन...

मैं इस शब्द के साथ ही फ्लैशबैक में चला गया। जब मैं तृषा को अपनी बांहों में भर उसके साथ वॉल डांस किया करता था। मेरी आँखें बंद थीं और ऐसा लग रहा था.. मानो तृषा मेरी बांहों में हो और हमारा सबसे पसंदीदा गाना बज रहा हो

‘हम तेरे बिन अब रह नहीं सकते.. तेरे बिना क्या वजूद मेरा।’

उसके हर कदम से मैं अपने कदम मिला रहा था और मेरी नज़र तृषा से हट ही नहीं रही थी। मैंने उसे अपनी बांहों में भर कर चूम लिया।

डर.. एक.. दो.. तीन..

मैं अब अपने जीवन के उस वक़्त में पहुँच गया.. जब तृषा से मिले मुझे पंद्रह दिन बीत चुके थे और किसी रिश्तेदार से भी उसकी कोई खबर नहीं मिल पा रही थी। जब तृषा की कामवाली छत पर आई थी और मैं उसकी नज़रों से बचता हुआ नीचे तृषा के कमरे तक पहुँचा था। मैं.. तृषा को टिशू पेपर पर अपना नाम लिख कर दे चुका था और उम्मीद कर रहा था कि कामवाली के नीचे मुझे देखने से पहले तृषा दरवाज़ा खोल दे।

मस्ती.. एक.. दो.. तीन...

मैं अपने घर में था और हम सब परिवार वाले 'झुम्मा.. चुम्मा.. दे दे..' वाले गाने पर डांस कर रहे थे। हम सब बहुत ही अजीब-अजीब सी शकलें बना रहे थे और हम सब बहुत खुश थे।

उदास.. एक.. दो.. तीन..

जब तृषा ने अपना फैसला मुझे बताया था कि वो अब किसी और के साथ शादी करेगी। मैं तो वहीं ज़मीन पर गिर पड़ा था जैसे.. किसी ने जैसे एक ही पल में मुझसे मेरा सब कुछ छीन लिया हो..

गुस्सा.. एक.. दो.. तीन..

इस बार मैं उन पलों में पहुँच गया.. जब मैं पंद्रह दिनों बाद तृषा के कमरे में छुपते-छुपाते पहुँचा था। रो-रो कर उसकी आँखें लाल हो चुकी थीं। उसे इतना मारा था कि अभी तक

उसके चेहरे पर हाथों के निशान थे। उसके चेहरे को देख मैं इतने गुस्से में भर गया कि जोर से अपना हाथ जमीन पर दे मारा।

हंसी.. एक.. दो.. तीन..

इस बार उन पलों को जी रहा था.. जब तृषा मुझे गुदगुदी लगा रही थी और मैं हंसते-हंसते पागल हुआ जा रहा था। मैं हाथ जोड़ कर उससे मुझे छोड़ने की मिन्नत कर रहा था..

दर्द.. एक..

इस शब्द के साथ ही ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे जख्मों को कुरेद दिया हो। मैं अपने घुटनों पर आ गया।

दो..

अब मैं उस वक़्त में था.. जब मैं तृषा का व्हाट्सऐप मैसेज सुन रहा था।

तीन..

मेरी आँखें भर आईं, ऐसा लगा जैसे इस सीने में किसी ने गर्म खंजर उतार दिया हो।

‘मत जाओ मुझे छोड़ के... प्लीज मत जाओ..!’

कहता हुआ मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। मेरे आंसुओं की बूंद.. अब सैलाब बन उमड़ पड़ी थी। मेरे सीने में दबा हर दर्द अब बाहर आ चुका था।

तभी तालियों और सीटियों की आवाज़ ने मुझे जैसे नींद से जगाया हो। उस पैनल के हर सदस्य की आँखें भरी हुई थीं।

कहानी पर आप सभी के विचार आमंत्रित हैं।
कहानी जारी है।

realkanishk@gmail.com

Other stories you may be interested in

बॉलीवुड अभिनेत्री की चुदाई

नमस्कार दोस्तो, कैसे हो आप सब ? आप सब ने अन्तर्वासना पर बहुत ही गर्म कहानियाँ पढ़ी होंगी. कुछ कहानियाँ इनमें से कल्पना की गई होती हैं. मैंने सोचा कि मैं भी आपको आज एक शानदार कहानी कल्पना के रूप में [...]

[Full Story >>>](#)

बॉलीवुड अभिनेत्री रवीना टंडन की गांड मारी

सभी खुले भोसड़ों और बंद बुरों को मेरे खड़े लंड का सलाम ! मेरा नाम आनन्द है। मैं कई सालों से अन्तर्वासना की हिंदी सेक्स स्टोरी पढ़ रहा हूँ। आज पहली बार मैं भी आपके सामने एक कहानी लेकर हाज़िर हूँ। [...]

[Full Story >>>](#)

चिकनी चूत वाली करीना की चुदाई

अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार। मेरा नाम जीतू है.. मैं उत्तर प्रदेश से हूँ। बात कुछ समय पहले की है। चूंकि मेरे प्रदेश में ज्यादा रोजगार तो है नहीं.. तो मैंने तय किया कि मैं बम्बई जाकर कुछ [...]

[Full Story >>>](#)

एयर पोर्ट पर आलिया की चूत गान्ड चुदाई

बॉलीवुड : कल्पना की उड़ान 'माफ कीजिए, क्या आप मेरे साथ आएंगी ?' एयरपोर्ट पर अपनी माँ के साथ लाइन में खड़ी हुई आलिया से सुरक्षाकर्मी ने पूछा। औसत कदकाठी वाला सुरक्षाकर्मी बहुत ज्यादा आकर्षक नहीं था, उसने सुरक्षाकर्मियों वाली एक विशेष [...]

[Full Story >>>](#)

मेरा गुप्त जीवन- 121

फ़िल्मी डांसरों की चूत चुदाई आज रात में कमरा नंबर 2 की डांसर लड़कियों की चुदाई तो अभी बाकी थी तो मैं जाकर उन्हीं के कमरे में थोड़ा लेट गया और ना जाने कब मेरी नींद लग गई और मैं [...]

[Full Story >>>](#)

